FYUGP

SANTALI MAJOR/ RESEARCH

FOR UNDER GRADUATE COURSES UNDER RANCHI UNIVERSITY, RANCHI

Implemented from

Academic Session 2022-2026

दूरभाष :

विश्वविद्यालय संताली विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

मोराबादी, राँची – 834008

पत्रांक : ....   दिनांक : ....

Members of board of studies for preparing syllabus of the four-year undergraduate programme (FYUGP)

आज दिनांक 22.09.2022 को अपराह्न 02:00 बजे विश्वविद्यालय संताली विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ0 मेरी एस0 सोरेंग की अध्यक्षता में संतालीके NEP चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में पाठ्यक्रम समिति (BOS) की एक बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए, जिनका नाम निम्नवत् है :–

विभागीय सदस्य :

1. प्रेम मुर्मू

   विश्वविद्यालय संताली विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

2. राज कुमार बास्की

   विश्वविद्यालय संताली विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

3. शकुन्तला बेसरा

   विश्वविद्यालय संताली विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

उक्त बैठक में सर्वसम्मति से पाठ्यक्रम को स्वीकृति प्रदान की गई तथा यह निर्णय लिया गया कि पाठ्यक्रम को विश्वविद्यलय भेजा जाय।

संताली स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य

संताली स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य निम्नांकित लक्ष्यों को प्राप्त करना है :

1. संताली साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत करना
2. संताली भाषा, साहित्य और समाज को समझने में लोगों को मदद करना
3. नई पीढ़ी को संताली साहित्य की ओर प्रेरित करना
4. संताली साहित्य के रचनाकारों को समाज में प्रतिष्ठित करना और उनके कृत्यों को प्रकाश में लाना
5. संताली साहित्य के महत्व और प्रतिष्ठा में वृद्धि करना
6. संताली साहित्य का संकलन, संचयन, प्रकाशन और मूल्यांकन को दिशा देना
7. विद्यार्थियों को कुशल, संवेदनशील और जिम्मेवार नागरिक बनाना
8. भाषा संबंधी कौशल का विकास करना
9. उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही ज्ञान कराना
10. मूलभूत कौशल यथा – लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति कला को विकसित करना
11. एक कुशल वक्ता का निर्माण करना
12. विभिन्न साहित्यिक विधाओं की जानकारी देना
13. स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के विभिन्न विशिष्ट साहित्यों से परिचित कराना
14. समाज और समुदाय के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना
15. समाज के विभिन्न समुदायों के प्रति सहिष्णुता एवं मैत्रीपूर्ण भावना का विकास करना
16. मानवीय मूल्यों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना
17. साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रवाद के सही अर्थों को बताना
18. राष्ट्रीय चेतना का विकास करना
19. भाषिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक विरासतों को राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में स्थापित करते हुए समानता का अवसर प्राप्त करना।

संताली स्नातक पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम

स्नातक संताली (प्रतिष्ठा) पाठ्यक्रम से संबद्ध अधिगम परिणाम इस प्रकार है :

1. साहित्य संप्रेषण के आधार बिंदुओं की जानकारी देना ताकि साहित्य के सम्बन्ध में एक स्पष्ट समझ विकसित हो सके।
2. संताली साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी मिल सके।
3. साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ने और समझने की योग्यता का विकास करना।
4. साहित्य लेखन की विविध शैली और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना।
5. स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सांस्कृतिकता के वृहद संजाल के बारे में जानकारी देना ताकि विद्यार्थी में साहित्यिक मूल्यांकन की योग्यता विकसित हो सके।
6. समीच्य दृष्टि और व्यवस्थित वैचारिकी का प्रर्दशन करना जिससे संताली साहित्य के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा और प्रश्न उत्पन्न हो सके।
7. आधुनिक संदर्भ में तकनीकी संसाधनों को इस्तेमाल करते हुए संताली साहित्य की जानकारी देना।
8. प्रत्येक स्तर पर जीवन के मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों का निर्धारण करने की क्षमता और ज्ञान का विकास करना।
9. विद्यार्थी में श्रवण, लेखन और वचन के साथ–साथ कल्पनाशक्ति का विकास करना जिससे कि उसके समग्र व्यक्तित्व में निखार आ सके।
10. साहित्य के अध्ययन के बाद रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान करते हुए रोजगार के नए मार्ग को तलाशना।

11. वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है जिसमें अभिव्यक्ति की प्रधानता है ऐसे में तकनीकी के विकास ने साहित्य संचरण को अत्यंत सुगम बना दिया है इसी के परिपेक्ष्य में संताली साहित्य लेखन और अनुवाद का मंच प्रदान करना जिसका उपयोग कर जनसंचार सं लेकर व्यक्तित्व विकास तक में विद्यार्थी निष्णात हो सके। विद्यार्थी की रूचियों को एक व्यवस्थित रूप देना और उन्हें विभिन्न विधाओं में से चयन की स्वतंत्रता प्रदान करना ताकि वे स्नातक पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद खुद ही साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में से अपनी रूचि के अनुसार चयन कर सकें।

12. भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को जानने के प्रति जागरूकता पैदा करना।

13. भारतीय साहित्य के वाड.मय में संतालीभाषा को स्थापित करना।

14. मातृभाषा, मातृभूमि की सेवा प्रेम को अटूट बनाना।

15. ग्रामीण एवं शहर के विद्यार्थियों को शैक्षणिक एवं साहित्यिक दृष्टिकोण से मजबुत बनाते हुए राष्ट्रीय एकता की भावना से जोड़ना।

MAJOR COURSE – MJ 1 : संताली साहित्य का इतिहास

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी संताली साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
2. संताली साहित्य की नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार और विशेषताओं के बारे में जान सकेंगे।
3. संताली पद्य–गद्य साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय से परिचित हो सकेंगे।
4. संताली साहित्य के काल विभाजन से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 संताली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्भव–विकास, नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार, विशेषताएँ।

इकाई– 2 संताली पद्य–गद्य साहित्य का इतिहास – सामान्य परिचय

(क) प्राचीनकाल

(ख) मध्य काल

(ग) आधुनिक काल

सहायक ग्रंथें :

❖ संताली भाषा साहित्य का उद्भव और विकास – डॉ0 कृष्ण चन्द्र टुडू

❖ संताली सांवहेंत् रेयाक् नागाम – लोखोन चोंद्रो मुर्मू

❖ संक्षिप्त संताली साहित्य – परिमल हेम्ब्रम

❖ सानताडी सांवहेत रेनाः ओमोनोम – प्रो (डॉ0) कृष्ण चन्द्र टुडू

MAJOR COURSE – MJ 2 : संताली लोकसाहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी संताली लोकसाहित्य की अवधारणा, परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ और महत्व को जान सकेंगे।
2. संताली लोक साहित्य के लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य एवं लोकनृत्य से परिचित होंगे तथा उनकी परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ और महत्व को भी जान सकेंगे।
3. संताली प्रकीर्ण साहित्य के अंतर्गत लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, मंत्र, खेल गीत से परिचित होंगे तथा उनकी परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ और महत्व को भी जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 अवधारणा, परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

इकाई– 2 लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य एवं लोकनृत्य – परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

इकाई– 3 प्रकीर्ण साहित्य – लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, मंत्र, खेल गीत – परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

सहायक ग्रंथें :

- ❖ संताली लोकगीतों में साहित्य एवं संस्कृति – डॉ0 रतन हेम्ब्रम
- ❖ संताली होड़ सांवहेत् – डॉ0 कृष्ण चन्द्र टुडू
- ❖ संताली भेन्ता काथा एवं क़ाहतुक – बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'
- ❖ होड़ काथा आर भेन्ता काथा – धीरेन्द्रनाथ बास्के
- ❖ कुदुम पुथी – बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'
- ❖ संताली लोकगीत और जीवन दर्शन – रमेश हेम्ब्रम
- ❖ नाहाक् लोककथा संग्रह – सुशील हेम्ब्रम

MAJOR COURE – MJ 3 : संताली व्याकरण

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी संताली व्याकरण से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी संताली व्याकरण के ध्वनि, अक्षर ज्ञान, शब्द ज्ञान, वाक्य ज्ञान और वर्त्तनी को जान सकेंगे।
3. विद्यार्थी संताली व्याकरण के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, लिंग, कारक, वचन, काल, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, पर्यायवाची शब्द, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द को भी जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 ध्वनि, अक्षर ज्ञान, शब्द ज्ञान, वाक्य ज्ञान, वर्त्तनी

इकाई– 2 संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, लिंग, कारक, वचन, काल उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, पर्यायवाची शब्द, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

सहायक ग्रंथें :

- ❖ संताली प्रवेशिका – डोमन साहु 'समीर'
- ❖ संताली पारसी उनुरूम – डॉ0 कृष्ण चन्द्र टुडू
- ❖ संताली व्याकरण – सनातन हाँसदा
- ❖ संताली भाषा साहित्य एवं व्याकरण – डॉ0 सुशील सोरेन

MAJOR COURSE – MJ 4 : संताली कवि एवं उनके काव्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी संताली कवियों और उनकें काव्यों से परिचित होंगे।
2. कविता के मानकों को समझकर कविता का सही ढंग से विश्लेषण कर सकेंगे।
3. उनमें काव्य सृजन की अभिरूचि उत्पन्न हो सकेगी जिससे संताली काव्य विकसित हो सकेंगे।
4. विद्यार्थियों में काव्य के पाठ को समझने की क्षमता हो सकेगी।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 प्राचीन कवियों का परिचय एवं काव्य

इकाई– 2 मध्यकालीन कवियों का परिचय एवं काव्य

इकाई– 3 आधुनिक कवियों का परिचय एवं काव्य

कवि/ओनोड़हिया़ :

माँझी रामदास टुडू 'रेसका', पंडित रघुनाथ मुर्मू, साधु रामचाँद मुर्मू, सारदा प्रसाद किस्कू, गोराचाँद टुडू, डोमन हाँसदा, पाउल जुझार सोरेन, नारायण सोरेन, डब्लू जी आर्चर, नाथानियल हैम्ब्रम

सहायक ग्रंथें :

- संताली साहित्य का इतिहास – बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'
- संताली साहित्य का उद्भव और विकास – डॉ0 कृष्ण चन्द्र टुडू

<u>MAJOR COURSE - MJ 5 :</u> संताली साहित्यकार एवं उनकी कृतियाँ

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी संताली साहित्यकारों और उनके कृतियों से परिचित होंगे।
2. उनमें साहित्य सृजन की अभिरूचि उत्पन्न हो सकेगी जिससे संताली साहित्य विकसित होगी।
3. विद्याथियों में साहित्य को समझने की दृष्टि विकसित हो सकेगी।
4. संताली साहित्य के प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप सें परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 प्राचीन साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

इकाई– 2 मध्यकालीन साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

इकाई– 3 आधुनिक साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

संताली साहित्यकार :

पी0ओ0 बोडिंग, एल0ओ0 स्क्रेप्सरूड, बाल किशोर बास्की, आदित्य मित्र, संताली, डोमन साहू समीर, बाबुलाल मुर्मू आदिवासी, कृष्ण चन्द्र टुडू भाईया हाँसदा चासा, ठाकुर प्रसाद मुर्मू

सहायक ग्रंथें :

- ❖ संताली साहित्य का उद्भव और विकास – डॉ0 कृष्ण चन्द्र टुडू
- ❖ संताली साहित्य का इतिहास – बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'
- ❖ संताली साहित्य का इतिहास – भैया हाँसदा

MAJOR COURSE - MJ 6 : संताली गद्य साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी साहित्य के विस्तृत गद्य विधाओं से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थियों में कहानी एवं उपन्यास के माध्यम से रचनात्मक विचार और सृजन धर्म विकास होगा।
3. कहानी एवं उपन्यास के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जगत की मानवीयता से परिचित होंगे।
4. उपन्यास के माध्यम से विद्यार्थी जीवन की वास्तविकता से परिचित होंगे।
5. विद्यार्थियों में नाट्य मंचन के माध्यम से अभिनय–कला का विकास होगा।
6. नाटक के माध्यम से विद्यार्थियों में संवाद–कला का विकास होगा।
7. विद्यार्थियों में निबंध लेखन की कला विकसित होगी।
8. विद्यार्थियों में आलोचना दृष्टि विकसित होगी।
9. विद्यार्थियों को आलोचना की नयी प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त होगा।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 कहानी, उपन्यास, नाटक एवं निबंध – परिभाषा, तत्व, विशेषताएँ, महत्व।

इकाई– 2 भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं समसामयिक संबंधित निबंध (प्रमुख साहित्कारों, पर्व–त्योहार एवं संस्कार से संबंधित निबंध)।

इकाई– 3 आलोचना एवं समालोचना

सहायक ग्रंथें :

- ❖ नाहाक् संताली ओनोल – बाबुलाल मुर्मू ‘आदिवासी’
- ❖ संताली साहित्य का उद्भव और विकास – प्रो0 (डॉ0) कृष्ण चन्द्र टुडू
- ❖ ञुत आर मारसाल – आदित्य मित्र संताली
- ❖ बा़रू बेडा – भागवत मुर्मू ठा़कुर
- ❖ एरावाक् आ़यदा़री – सोनोत किस्कू

<u>MAJOR COURSE - MJ 7 :</u> संताली भाषा विज्ञान

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्त्व का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. संताली साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
3. लिपि और लिपि की समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।
4. भाषा परिवर्तन के कारणों से परिचत हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–1 संताली भाषा का परिचय, परिभाषा, उत्पत्ति, क्षेत्र विस्तार, वर्गीकरण, विशेषता, भाषा परिवर्तन के कारण, बोली और भाषा में अंतर।

इकाई– 2 ध्वनि विज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, लिपि, लिपि समस्या एवं संभावनाएँ

सहायक ग्रंथें :

- संताली आद पारसी आकिल – बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'
- संताली भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 कृष्ण चन्द्र टुडू
- भाषा विज्ञान – डॉ0 भोलानाथ तिवारी

MAJOR COURSE - MJ 8 : संताली काव्य के विविध रूप

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. काव्य के महत्वपूर्ण उपादानों से परिचित हो सकेंगे।
2. संताली काव्यशास्त्र की परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
3. विद्यार्थी साहित्य सृजन के मूलाधार, सृजन की केन्द्रीय चेतना और उनके विभिन्न प्रयोजनों को समझ सकेंगे।
4. साहित्य सृजन में रस, छंद और अलंकार के महत्त्व को जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 संताली महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य।

इकाई– 2 रस, छंद, अलंकार – अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, अतिश्योक्ति, विभावना।

सहायक ग्रंथें :

❖ पिल सागोर भाग–1, 2 : भैया हाँसदा 'चासा'

❖ खेरवाड़ बोंसो धोरोम पुथी : मांझी रामदास टुडू 'रेसका'

❖ भेन्ता काथा आर काहतुक : बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'

❖ काव्य शास्त्र : डॉ0 भगीरथ मिश्र

MAJOR COURS - MJ 9 : संताली पत्र–पत्रिकाओं का क्रमिक विकास

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थियों में अच्छे लेखक बनने की अभिरूचि पैदा होगी।
2. संताली में प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं से परिचित हो सकेंगे।
3. संताली पत्र–पत्रिकाओं की क्रमिक विकास एवं वर्तमान स्थिति से अवगत होंगे।
4. पत्र–पत्रिकाओं में उल्लेखित प्रमुख तथ्यों की जानकारी हासिल प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाइ–1 संताली पत्र–पत्रिकाओं का परिचय – दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवाषिक एवं वार्षिक।

इकाई– 2 पत्र–पत्रिकाओं में उल्लेखित प्रमुख तथ्यों की जानकारी एवं उसका विश्लेषण।

इकाई– 3 संताली पत्र–पत्रिकाओं की क्रमिक विकास एवं वर्तमान स्थिति

प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ : (पेड़ा होड़, होड़ सोम्बाद, सिली, तेतरे, पछिम बंगला, जुग सिरिजोल, मारसाल ताबोन, गोडेत)

सहायक ग्रंथें :

- संताली ओनोल साकाम को रेयाक् इतिहास – गब्रीएल सोरेन

ADVANCE MAJOR – AMJ 1 :

झारखण्डी कानून एवं पारम्परिक शासन व्यवस्था

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी भूमि से संबंधित कानूनों से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी हक और अधिकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी पेसा एवं विल्किन्सन रूल से परिचित होंगे।
4. विद्यार्थी झारखण्डी पारम्पारिक शासन व्यवस्था से अवगत होंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–1 छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सीएनटी एक्ट 1908) एवं संताल परगना काश्तकारी अधिनियम (एसपीटी एक्ट)

इकाई– 2 पेसा (PESA) कानून 'द प्रोविजनल ऑफ पंचायत एक्टेंशनटू द शिड्यूल्ड एरिया–1996 एवं विल्किन्सन रूल।

इकाई– 3 मुण्डा–मानकी, पड़हा–पंचायत, माझी–परगनैत, डोकलो–सोहोर, ग्रामसभा, पंचायत, दिउरि, पाहन, महतो, दिवान, कोटवार, नायकी

सहायक ग्रंथें :

- ❖ छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सीएनटी एक्ट, 1908) : डी॰पी॰ नरूल्ला
- ❖ संताल परगना काश्तकारी अधिनियम (एसपीटी एक्ट) : क्राउन पब्लिकेशन्स
- ❖ झारखण्ड पंचायती राज अधिनियम, 2001 : रश्मि कात्यायन
- ❖ छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सीएनटी एक्ट, 1908) सामान्य परिचय और जानकारी : चन्द्रभूषण देवगम
- ❖ ग्राम पंचायत व्यवस्था : कितनी अच्छी, कितनी बुरी : पी॰एन॰एस॰सुरीन
- ❖ आदिवासी अधिकार : सं॰ रमेश जेराई
- ❖ मैन्यूअल ऑफ झारखण्ड लैंड्स : रश्मि कात्यायन
- ❖ छोटानागपुर भूमि विधियाँ : एस॰एन॰श्रीवास्तव
- ❖ पंचायती राज चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ : महिपाल

ADVANCE MAJOR - AMJ 2 :

लेखन एवं प्रारूपण विधि, वाक्यांश, शब्द एवं वाक्यों का अनुवाद

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी लेखन प्रक्रिया को सीख सकेंगे।
2. किसी भी भाषा को अनुवाद करने की कला सीख पायेंगे।
3. सभी प्रकार के कार्यालयी पत्र एवं संपादकीय पत्र लेखन को सीख पायेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 पत्र लेखन, कार्यालयी पत्र–व्यवहार, संपादकीय पत्र लेखन, आवेदन लेखन

इकाई– 2 हिन्दी/अंगेजी से संतालीभाषा में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का अनुवाद

इकाई– 3 संताली भाषा से हिन्दी/अंग्रेजी में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का अनुवाद

सहायक ग्रंथें :

- ❖ आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ॰ वासुदेव नन्दन प्रसाद
- ❖ वृहत व्याकरण भास्कर : डॉ॰ वचन देव कुमार
- ❖ रचनात्मक लेखन : डॉ॰ रमेश गौतम

ADVANCE MAJOR - AMJ 3 :

झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानी एवं शहीद

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानी और शहीदों का जान सकेंगे।
2. देश एवं राज्य के प्रति समर्पण भाव जागृत होगी।
3. विद्यार्थी शहीदों के आहुति से प्रेरणा ले सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 सिद्धो–कान्हू, बाबा तिलका मांझी, भगवान बिरसा मुण्डा, गया मुण्डा, वीर बुधु भगत, जतरा टाना भगत, तेलंगा खड़िया, पोटो सरदार, नाराहो, मछुआ गागराई, महेश्वर जामुदा, मुर्मू, शेख भिखारी, गणपतराय, लाड़ो जोंको, सिनगी दई, माकी दई, नीलाम्बर–पिताम्बर।

इकाई– 2 अल्बर्ट एक्का, कार्तिक उराँव, अब्दुल हमीद, रघुनाथ महतो, शहीद निर्मल महतो, विनोद बिहारी महतो, शक्तिनाथ महतो, सुनील महतो, अमको सिमको लड़ाई।

सहायक ग्रंथें :

❖ झारखण्ड के शहीद : डॉ॰ भुनेश्वर अनुज

❖ झारखण्ड की समर गाथा : ‘ शैलेन्द्र महतो

❖ झारखण्ड आंदोलन का दस्तावेज, शोषण, संघर्ष एवं शहादतः अनुज कुमार सिन्हा

❖ सिंहभूम के शहीद कोल ’लड़का हो’ : डॉ॰ दमयन्ती सिंकु

❖ झारखण्ड के शहीद : डॉ॰ दिवाकर मिंज

ADVANCE MAJOR - AMJ 4 :

झारखण्डी समुदाय के संस्कार एवं संस्कृति

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी झारखण्डी पारम्पारिक शासन व्यवस्था से अवगत होंगे।
2. विद्यार्थी सभी प्रकार के संस्कारों को जान पायेंगे।
3. विद्यार्थी झारखण्ड के सभी संस्कृतियों से परिचित होंगे।
4. विद्यार्थी जनजातीय गाँव के रूढ़ीगत प्रथाओं के बारे में जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 जन्म संस्कार, नामकरण संस्कार, कर्णवेद संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार, दिरि रकब संस्कार (हड़गड़ी संस्कार)।

इकाई– 2 मगे, बा, सरहुल, करम, बाहा, सोहराय, जतरा, टुसू, जोमनवा/नवाखानी

सहायक ग्रंथें :

- ❖ खड़िया, मुण्डा और उराँव संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ॰ जोवाकिम डुंगडुंग
- ❖ समाजिक एवं सांस्कृतिक मानवशास्त्र : डॉ॰ श्याम चरण दुबे
- ❖ समाज और संस्कृति : डॉ॰ श्याम चरण दुबे
- ❖ पर्व–त्योहार, मेले और पर्यटन : संजय कृष्ण
- ❖ खेरवाल आ़री बाँदी : प्रो० (डॉ०) कृष्ण चन्द्र टूडू

INTRODUCTORY REGULAR COURSE (IRC)

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1- विद्यार्थी संताली साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।

2. संताली साहित्य की उद्भव–विकास, नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार और विशेषताओं के बारे में जान सकेंगे।

3. संताली साहित्य विधा से परिचित हो सकेंगे।

4. संताली साहित्य के कवियों से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 संताली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्भव–विकास, नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार, विशेषताएँ।

इकाई– 2 संताली लोकसाहित्य एवं शिष्ट साहित्य

(क) लोक साहित्य– लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य एवं प्रकीर्ण साहित्य

(ख) शिष्ट साहित्य–

1. पद्य साहित्य– गीत एवं कविताएँ
2. गद्य साहित्य– कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध एवं जीवनी

इकाई–3 कवि एवं काव्य

(क) प्राचीन काल

(ख) मध्य काल

(ग) आधुनिक काल

सहायक ग्रंथें :

- जनजातीय भाषाएँ और मिशनरी : नागेश्वर सिंह
- साहित्यालोचन : डॉ॰ श्यामसंदुर दास
- कला : हंस कुमार तिवारी
- संताली भाषा साहित्य का उद्भव और विकास : डॉ0 कृष्ण चन्द्र टुडू
- संताली सांवहेंत् रेयाक् नागाम : लोखोन चोंद्रो मुर्मू
- संक्षिप्त संताली साहित्य : परिमल हेम्ब्रम

- सानताडी सांवहेत रेनाः ओमोनोम : प्रो (डॉ0) कृष्ण चन्द्र टुडू
- संताली लोकगीतों में साहित्य एवं संस्कृति : डॉ0 रतन हेम्ब्रम
- संताली होड़ सांवहेत् : डॉ0 कृष्ण चन्द्र टुडू
- संताली भेन्ता काथा एवं क़ाहतुक : बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'
- होड़ काथा आर भेन्ता काथा : धीरेन्द्रनाथ बास्के
- कुदुम पुथी : बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'
- संताली लोकगीत और जीवन दर्शन : रमेश हेम्ब्रम
- नाहाक् लोककथा संग्रह : सुशील हेम्ब्रम

MINOR ELECTIVE (MN 1) : कला, साहित्य एवं संस्कृति

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कला एवं साहित्य के संबंध में जान सकेंगे।
2. विद्यार्थी कला एवं समाज के बीच परस्पारिक संबंध के बारे में समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी संताली के सभी कला एवं संस्कृति को जान पायेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 कला का सामान्य परिचय, वर्गीकरण, कलाओं का महत्व, झारखण्ड की पारम्परिक प्रमुख कलाएँ – मिट्‌टी कला, चित्र कला, काष्ठ कला, बाँस कला हस्तकला (सिलाई–कढ़ाई–बुनाई),

इकाई– 2 कला, साहित्य एवं समाज का अन्तःसम्बन्ध

इकाई– 3 कला एवं संस्कृति का अन्तःसम्बन्ध

सहायक ग्रंथें :

- ❖ झारखण्ड की पारम्परिक कलाएँ : डॉ॰ गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
- ❖ कला : हंस कुमार तिवारी
- ❖ साहित्यलोचन : डॉ॰ श्याम सुन्दर दास
- ❖ कला विवेचन : डॉ॰ विमल कुमार
- ❖ तुलिका (झारखण्ड की जनजातीय चित्रकला) : डॉ॰ आदित्य प्रसाद सिन्हा
- ❖ थाती : कला संस्कृति विभाग, झारखण्ड सरकार
- ❖ सौंदर्य शास्त्र : कुमार विमल
- ❖ कला कोश : अमरनाथ कपूर

MINOR ELECTIVE (MN 2) :

पारम्परिक वाद्य यंत्र, गीत एवं नृत्य शैलियाँ

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी अपनी जाति की पारंपरिक वाद्य यंत्र, गीत एवं नृत्य से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी वाद्य यंत्र में उपयोग की जाने वाले सामग्री के बारे में जान पायेंगे।
3. विद्यार्थी सभी प्रकार के गीत के राग एवं नृत्य शैली को अपने जीवन में उतार सकेंगे।
4. विद्यार्थी इन सभी चिजों की विशेषता और महत्व को जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 बनावट, प्रकृति, आकार–प्रकार (मांदर, नगाड़ा, ढोल, रूतु, बनम, सेकोःए, करताल, चयोम, गिनी, सकोवाँ, घंटा, भेर, नरसिंघा, झांझ, ठेचका, रबका, टुहिला, ढाक, गुगुरा)

इकाई– 2 नृत्य की परिभाषा, प्रकार, महत्व, विशेषता एवंपारम्परिकआभूषण

इकाई– 3 नटुआ, छऊ, पईका, घोड़ानाच, जदुर, करम, सरहुल, गेना, जतरा, केमटा, झुमइर, लहसुआ, भिनसरिया, डमकचनृत्य, दोङ लांगड़े

सहायक ग्रंथें :

- ❖ झारखण्ड के वाद्य यंत्र : डॉ॰ गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
- ❖ झारखण्ड के लोकसंगीत : डॉ॰ गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
- ❖ झारखंड इन्साइक्लोपीडिया, भाग–4 : रणेन्द्र कुमार
- ❖ दोङ सेरेञ : भागवत मुर्मू

I. MINOR ELECTIVE (MN 3) :

झारखण्डी समुदाय का सांस्कृतिक केन्द्र एवं झारखण्डी पाक् कला

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी जनजातियों के युवागृह से परिचित होंगे ।
2. जनजातियों की सामाजिक व्यवस्था में युवागृह के महत्व से भी परिचित होंगे।
3. विद्यार्थी सामाजिक सांस्कृतिक केन्द्र एवं झारखण्डी पाक् कला के बारे में परिचित होंगे।
4. विद्यार्थी सभी प्रकार के जनजातीय पाकवानों से परिचित होंगे।
5. विद्यार्थी सभी प्रकार के जनजातीय युवागृहों से परिचित होंगे।
6. विद्यार्थी रोग निरोधक पाकवानों से परिचत होंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 गितिःओड़ाः, गितिः ओअ, धुमकुड़िया, गिता'चाड़ी, गिपितिच् टाँडी, माँझी आखड़ा, सुतानटांडी, आतूबैसी

इकाई– 2 अखड़ा–परिभाषा, सामाजिक महत्व एवं विशेषता

इकाई– 3 मडुआ रोटी, मकई–सरई–महुआ लाठो, धुसका, खपरा रोटी, सकमलद्, दुललद्, छिलका रोटी, डुम्बुः, मीट–मछली पकाने की कला, लद् जिलु, लेटेमंडि, गुड़ पीठा, अरसा रोटी, गिल पिठ़ा, मातकोम तिकी।

सहायक ग्रंथें :

- ❖ मुण्डा कोअः आकाड़ा : डॉ॰ रामदयाल मुण्डा
- ❖ झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत : डॉ॰ गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
- ❖ झारखण्ड की पारम्परिक कलाएँ : डॉ॰ गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
- ❖ झारखण्ड के सदानों का इतिहास : डॉ॰ वीरेन्द्र कुमार साहु
- ❖ भारतीय जनजातीय संस्कृति : गया पाण्डेय

- ❖ सामाजिक मानवशास्त्र परिचय : मजुमदार एवं मदन
- ❖ सामाजिक सांस्कृतिक मानवशास्त्र : विजय शंकर उपाध्याय, गया पाण्डेय
- ❖ खड़िया जीवन और परम्पराएँ : जोवाकिम डुंगडुंग एस॰जे॰
- ❖ खड़िया, मुण्डा और उराँव संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययनः जोवाकिम डुंगडुंग एस॰जे॰

MIL- संताली व्याकरण एवं संप्रेषण (संचार)

(अ) निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का पद्य भाग पाठ्य होगा।

(आ) व्याकरण अध्येय होगा।

(ई) निबंध – ऋतु पर्व, राष्ट्रीय समस्याएँ, भाषा, साहित्य, संस्कृति, प्रकृति, यात्रा वर्णन आदि।

निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :

(अ) पाठ्य पुस्तक –

1. सरजोम् बा : प्रकाशक राँची विश्वविद्यालय

(आ) व्याकरण –

1. संताली प्रवेशिका : डॉ॰ डोमन साहू 'समीर'
2. नाहाक् संताली ओनोल् : बाबुलाल मुर्मू 'आदिवासी'
3. बयंकिर :